P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत–अमेरिका सम्बन्धों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान परिदृश्य

सारांश

भारत ने स्वतंत्रता के बाद गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाते हुए सभी देशों से द्विपक्षीय सम्बन्ध स्थापित किए। अमेरिका का भारत ने सभी क्षेत्रों में सहयोग किया और अमेरिका ने भी भारत की सहायता की। भारत द्वारा 1974 एवं 1998 में परमाणु परीक्षण करने से अमेरिका थोड़ा नाराज अवष्य हुआ एवं भारत पर प्रतिबन्ध भी लगाए परन्तु दोनों राष्ट्र लोकतांत्रिक हैं एवं भारत अमेरिका का अच्छा मित्र हो सकता है इन्हीं संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए अमेरिका का झुकाव भारत की ओर हो गया है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार राष्ट्र है दोनों के मध्य व्यपार 126 मिलियन डॉलर तक पहुँच गया है।

मुख्य शब्द : द्विपक्षीय सम्बन्ध, विदेष यात्रा, शीतयुद्ध, परमाणु परीक्षण, द्विपक्षीय समझौता, वैष्वीकरण, व्यापारिक प्रतिबन्ध, परमाणु समझौता, अमरीकी कांग्रेस, भारतीय संसद, कांमकोसा, 2 + 2 वार्ता, साइवर सिक्योरिटी समझौता।

उमाशंकर शर्मा
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

मानव एक विवेकषील प्राणी है। मानव स्वाभावतः राजनीतिक प्राणी है। वह समाज में अन्तः क्रिया करता है। राष्ट्र भी दुनिया के अन्य राष्ट्रों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करते हैं। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं पारिस्थितिकी का प्रभाव राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों पर पड़ता है। भारत–अमेरिका के मध्य भी समय के साथ सम्बन्धों में बदलाव देखे गये हैं क्योंकि समय के साथ–साथ विज्ञान एवं तकनीक में परिवर्तन आता है। लोगों की सोच एवं एप्रोच बदलती है। परिवर्तित परिस्थतियों के साथ भारत–अमेरिका के मध्य सम्बन्धों में नए आयाम और नए लक्ष्य जुड़ गए हैं। आरंभ में दोनों के मध्य राजनीतिक सम्बन्धों का दौर चला और वर्तमान तक आते–आते आर्थिक–व्यापारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग होने लगा।

साहित्यावलोकन

भारत–अमेरिका सम्बन्धों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान परिदृष्य शोध पत्र लेखन हेतु उपलब्ध साहित्य का अवलोकन किया गया है शोध के क्षेत्र से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन किया। इस विषय से सम्बन्धित लेख वर्ल्ड फोकस मासिक जर्नल, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका साहित्य भवन प्रकाषन आगरा, समाचार पत्र द हिन्दु, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण से मुद्रित हुए जिनका अध्ययन किया।

राजस्थान पत्रिका में संपादकीय प्रो. स्वर्ण सिंह के आलेख आतंक के विरूद्ध लड़ना तो खुद ही होगा का अध्ययन किया। वेब दुनिया में मुद्रित ओंकारेष्वर पाण्डेयका आलेख ''अमेरिका महज व्यापार न समझे भारत को'' का साहित्यावलोकन किया। बी.बी.सी. हिन्दी न्यूज चैनल के आलेखों का भी शोध पत्र लेखन में योगदान रहा इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से सम्बन्धित तथा भारतीय विदेष नीति पर लिखी गई पुस्तकों का अध्ययन किया।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत की आजादी के बाद से ही भारत अमेरिका के सम्बन्ध उतार–चढ़ाव भरे रहे हैं। शीत युद्ध के समय में और भारत के परमाणु कार्यक्रम को लेकर दोनों राष्ट्रों के मध्य रिष्तों में खिंचाव देखा गया परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इनमें गर्माहट देखी जा रही है दोनों राष्ट्रों के मध्य आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर सहयोग में भी वृद्धि देखी गई है। इस दौरान 20 से अधिक बार भारतीय प्रधानमंत्रियों ने और एक

भारतीय राष्ट्रपति ने आमेरिका का दौरा किया जबकि सात बार अमरीकी राष्ट्रपति भारत आए।

पंड़ित जवाहरलाल नेहरू 1949 में अमरीका की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री थे उस समय अमरीकी राष्ट्रपति ट्रमैन थे। इसके बाद 1956 में, 1960, 1961 में प्रधानमंत्री नेहरु ने अमेरिका की यात्राएं की। 1959 में आइजन हॉवर भारत का दौरा करने वाले पहले अमरीकी राष्ट्रपति थे।

शीतयुद्ध के दौरान भारत ने तटस्थता की घोषणा की थी। भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के नेता के रूप में उभरा इसलिए अमेरिका से रिष्तों में हिचकिचाहट थी 1962 में चीन के साथ युद्ध के दौरान पं. नेहरु ने अमरीकी राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी को पत्र लिखकर मैकमोहन लाइन को सीमा रेखा मानने का अनुरोध किया। 1965 को भारत–पाकिस्तान युद्ध तक दोनों देषों के मध्य सम्बन्ध अच्छे रहे। 1963 में सर्वपल्ली राधाकृष्णन अमरीका की यात्रा करने वाले पहले भारतीय राष्ट्रपति थे। इसी वर्ष अमरीकी कृषि विषेषज्ञनॉरमन वोरलांग भारत आए और भारतीय कृषि वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन के साथ मुलाकात की और हरित क्रान्ति के बीज पड़े।

1966 और 1971 में भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने अमेरिका की यात्रा की 1969 में अमरीकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन भारत आए। 1982 में इंदिरा गाँधी ने आखिरी बार अमेरिका का दौरा किया था। 1974 के परमाणु परीक्षणों के कारण दोनों राष्ट्रों के मध्य लगभग दो दषक तक सम्बन्धों में खिंचाव रहा।

1978 में मोरारजी देसाई अमेरिका गये इसी वर्ष जिमी कार्टर भारत आये उन्होंने भारतीय संसद को संबोधित किया।

1985 से 1987 तक राजीव गाँधी ने तीन बार अमेरिका की यात्राएं की उन्होने 1985 में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन से वार्ता की।

1991 में आर्थिक उदारीकरण के चलते अमेरिका के साथ कारोबारी रिष्तों में सुधार हुआ।

सन् 2000 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अमरीकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया इसी वर्ष राष्ट्रपति क्लिंटन भारत आए एवं भारतीय राष्ट्रपति के. आर. नारायणन से मिले ऊर्जा और पर्यावरण पर द्विपक्षीय समझौता हुआ उन्होंने भारतीय संसद को संबोधित किया इसी वर्ष 1998 में परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका के साथ भारत के सम्बन्धों में तनाव आया था अमरीकी राजदूत को वापस बुलाने के साथ राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए।

1999 के कारगिल युद्ध में अमेरिका ने भारत का पक्ष लिया पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा से अपनी सेनाएं पीछे हटाई 2001 में बुष प्रषासन ने आर्थिक प्रतिबन्ध हटाए 2005 और 2008 में भारतीय प्रधानमंत्री ने अमेरिका का दौरा किया। 2005 में डॉ. मनमोहन सिंह ने कांग्रेस संयुक्त सत्र को संबोधित किया। 2006 में जार्ज बुष जूनियर भारत आये एवं परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए।

2009 में भारते के विदेष मंत्री एस.एम. कृष्ण और अमरीकी विदेष मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने सेफगार्ड समझौता भी किया जिसके तहत भारत अपने कार्यक्रम के लिए अमरीकी उपकरण प्राप्त कर सकेगा इसी समय दोनों राष्ट्रों ने आतंकवाद का मिलकर मुकाबला करने की प्रतिबद्धता जताई है।

2010 में भारत और अमरीका ने पहली बार इंडिया–यूएस स्ट्रेटेजिक डॉयलाग की नींव डाली इसी वर्ष राष्ट्रपति बराक ओबामा ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की दावेदारी का समर्थन किया। 2011 में भारत और अमरीका ने साइबर सिक्योरिटी के लिए एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए जो स्ट्रेटेजिक डॉयलाग का ही भाग है। 2014 में भारत में हुए आम चुनाव के बाद राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत के नए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनकी जीत पर बधाई दी और अमेरिका यात्रा का न्योता भी दिया।

जून 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका गए और उन्होंने सुझाव दिया कि 2 + 2 वार्ता जो अब तक नौकरषाहों के मध्य होती थी अब विदेष मंत्री और रक्षामंत्री स्तर पर होनी चाहिए।

2018 में दोनों राष्ट्रों के मध्य 'कामकासा' पर हस्ताक्षर हुए जो हमारी सेनाओं के बीच अधिक पारिस्थिकता प्रदान करेगा। सेना के लिये सूचना और खुफिया जानकारियाँ उपलब्ध हो सकेंगी।

निष्कर्ष

आजादी के बाद शीतयुद्ध काल में भारत तथा अमेरिका के बीच सम्बन्ध अच्छे नहीं रहे, क्योंकि भारत ने इस काल में अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति के अन्तर्गत उपनिवेषवाद, नवसाम्राज्यवाद आदि का विरोध किया, जिससे भारत व अमरीका के बीच स्वाभाविक तौर पर विरोध की स्थिति उत्पन्न हो गई, लेकिन उत्तर–षीत युद्ध काल में दोनों देषों के बीच पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्धों का निरन्तर विकास हुआ है इसमें चीन के उदय के साथ–साथ भारत द्वारा उदारवादी आर्थिक नीतियों का अपनाना तथा वैष्वीकरण आदि ऐसे मुख्य कारक हैं, जिससे दोनों देषों के बीच घनिष्ठ सामरिक सम्बन्धों का विकास हुआ 2008 में दोनों देषों ने ऐतिहासिक सिविल परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे 1974 से चला आ रहा भारत का परमाणु अलगाव समाप्त हुआ तथा भारत को विष्व के विभिन्न देषों के साथ परमाणु व्यापार का रास्ता साफ हुआ इसके बाद प्रतिरक्षा आपूर्ति, संयुक्त सैनिक अभ्यास, आंतकवाद रोधी उपाय तथा हिन्द प्रषान्त क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के आलोक में शान्ति व स्थिरता की स्थापना आदि के क्षेत्र में दोनों देषों ने सहयोग को अत्यधिक मजबूत किया है आज भारत अमरीका का एक प्रमुख रक्षा भागीदार है तथा इसकी दक्षिण एषिया तथा हिन्द–प्रषान्त क्षेत्र की रणनीति में प्रमुख भूमिका में है, फिर भी भारत की कतिपय समीक्षक की इस बात पर चिन्ता व्यक्त कर रहे हैं कि सामरिक मामलों में अमरीका तथा भारत की अतिषय घनिष्ठता भारत की रणनीतिक स्वायत्ता को शामिल कर रहे हैं अतः

भारत को रणनीतिक मामलों में अमरीकी नीति का आँखमूद कर पालन न कर अपने स्वतंत्र निर्णय के लिए स्थान बनाए रखना चाहिए, ताकि भारत आवष्यकता पड़ने पर सामरिक मामलों में स्वतंत्र होकर निर्णय ले सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बी.एल. फड़िया, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, 2010*
2. *आर.एस. यादव, "भारतीय विदेश नीति एक परिचय", पीयरसन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012*
3. *तपन बिस्वाल, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", ओरियन्ट ब्लैकश्वान प्रा.लि., हैदराबाद, 2017*
4. *केनेड़ी, पॉल, ''राईज एण्ड फॉल ऑफ दा ग्रेट पावर्सः ईकोनोमिक चेन्जिंग एण्ड मिलिटरी कनफ्लिक्टस फ्रॉम 1500 टू 2000''*
5. *खन्ना, वी.एन. ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', विकास पब्लिषिंग हाउस, दिल्ली, 2013*
6. *द हिन्दू, नई दिल्ली, 25 मई, 2005*
7. *वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम रिपोर्ट 2017—18*
8. *वर्ल्ड फोकस रैफ्रीड़ रिसर्च, मासिक जर्नल*
9. *प्रो. स्वर्णसिंह "आतंक के विरूद्ध लडना तो खुद ही होगा" संपादीय लेख, राजस्थान पत्रिका, 28 जून, 2017*